P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-III, ISSUE-II, November-2014
E: ISSN No. 2349-9443
Periodic Research

प्रथम बौद्ध संगीति

राजुल अग्रवाल
शोध छात्रा
इतिहास विभाग
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय,
जबलपुर

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र गौतम बुद्ध की शिक्षाओं के संकलन से संबंधित है। इस शोध पत्र के माध्यम से शोधार्थी ने यह बताने का प्रयास किया है कि महात्मा बुद्ध के महापरिनिर्वाण के बाद आखिर ऐसी क्या आवश्यकता आ पड़ी कि उनकी मृत्यु के तुरन्त बाद ही बौद्ध धर्म की संगीति करनी पड़ी। साथ ही साथ इस शोध पत्र को लिखने का मेरा उददेश्य सभी शोधार्थियों को इस संगीति का समग्र अध्ययन प्रंस्तुत कराना था जिससे वह अपने शोध कार्य में सहजता का अनुभव करे और शोध के साथ– साथ ही शोध पत्र का सूक्ष्मता से अवलोकन करें। महात्मा गौतम बुद्ध जो बौद्ध धर्म के प्रवर्तक, जीव और जगत के प्रति व्यावहारिक दृष्टिकोण रखते थे। उनके विभिन्न प्रवचनों और उपदेशों में उनके जीवन दर्शन की झलक मिलती है। उनकी सवसे बड़ी विशेषता थी कि वह उदाहरणों के माध्यम से कठिन से कठिन विषय की व्याख्या भी सरल व सुबोध कर देते थे। उन्होनें अपने आप को इस समस्या में नहीं डाला कि मनुष्य अमर है या नश्वर, जीव और शरीर एक है या अलग। उनका धर्म था मोक्ष के मार्ग का निर्देशन करना।उनके धर्म का लक्ष्य था मनुष्य को सांसारिक वेदना और कष्टों से मुक्त करना। शील और सदाचार के वह सर्मथक थे तथा यह मानते थे कि इनके बिना मनुष्य का जीवन युक्तियुक्त नहीं।त्याग और संयम की वे सराहना करते थे। अच्छे–बुरे की पहचान से कार्यशील होना तथा नीरक्षीर विवेकी होना वे मानव का सबसे बड़ा धर्म मानते थे। अपने कर्म से दूसरे को पीड़ा न पहुचाना, इसको सोचना, उन्होंने मनुष्य के लिए अनिवार्य माना। जिस कर्म से सब सुखी हैं वहीं कर्म ठीक हैं। तथा जिस कर्म से अपने को और दूसरे को दुःख और आघात पहुँचता है, वह कर्म ठीक नहीं है। वे जाति–पाति के विरोधी थे। कर्म के आधार पर ही मनुष्य को छोटा या बड़ा मानते थे। उन्होनें अपने धर्म में न केवल राजा व धनी वर्गो के लोगों को ही वल्कि वैशाली की प्रसिद्ध गणिका आम्रपाली तथा अंगुलिमाल नामक डाकू को भी अपना शिष्य बनाया। महात्मा बुद्ध के महापरिर्वाण के पश्चात् उनकी शिक्षाओं तथा उपदेषों को सग्रह करना एक महत्वपूर्ण कार्य था ताकि आने वाली पीढ़ीया उनकी शिक्षाओं से लाभान्वित हो सके। इसी उददेश्य की पूर्ति हेतु राजगृह की सप्तपर्णी गुहा में प्रथम बौद्ध संगीति का आयोजन हुआ, जिसकी अध्यक्षता स्थविर महाकस्यप ने की। महात्मा बुद्ध के परम षिष्य आनन्द व उपालि ने पालि भाषा में कम्रशः धर्म व विनय का संगायन किया।

मुख्य शब्द : शिक्षाओं, भिक्षुओं, वृद्धावस्था

प्रस्तावना

विश्व में हुए बौद्धों के महासम्मेलन को ही बौद्ध संगीति कहा जाता है। बौद्ध धर्म के बिकास और उसकी साहित्यक विशालता में समय समय पर होने वाली इन महान बौद्ध संगीतियों का बहुत ही महत्वपूर्ण तथा प्रभावकारी योगदान रहा है। प्रथम बौद्ध संगीति या भिक्षु संघ की प्रथम परिषद जो भगवान् बुद्ध के महापरिनिर्वाण के बाद राजगृह में बुलायी गयी, प्रथम' संगीति', 'संगायन' या 'सग्रह' कहलायी। 543 ई.पू. की वैशाख पूर्णिमा को कुशीनगर के दो शाल वृक्षों के नीच भगवान् बुद्ध को महापरिनिर्वाण प्राप्त होने के तीन माह पूर्व ही बुद्ध ने आनन्द से कह दिया था कि वे कुशीनगर में परिनिर्वाण करेंगे और उनके चले जाने पर धर्म और विनय के उपदेश उनके रास्ता होंगे।कुशीनगर में भगवान् बुद्ध के महापरिनिर्वाण के क्षणों में महास्थविर महाकाश्यप वहाँ अनुपस्थित थे। बुद्ध का महापरिनिर्वाण हुए अभी एक सप्ताह बीता था कि पावा से राजगृह आते समय आयुश्मान महाकाश्यप को मार्ग में एक आजीवक सम्प्रदाय के साधु द्वारा भगवान् के महापरिनिर्वाण का समाचार प्राप्त हुआ। सुनते ही कुछ भिक्षु विलाप लगे उन्ही भिक्षुओं में से वृद्धावस्था में भगवान् के महापरिनिर्वाण का समाचार प्राप्त हुआ। सुनते ही कुछ भिक्षु विलाप लगे उन्ही भिक्षुओं में से वृद्धावस्था में

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-III, ISSUE-II, November-2014
E: ISSN No. 2349-9443
Periodic Research

प्रव्रजित सुभद्र नामक भ्रमित भिक्षु बुद्ध की शिक्षाओं के विषय में अपशब्द कहने लगा और कहने लगा," भिक्षुओं ! न रोओ, न विलाप करो ; क्योंकि अव तो हम उस महाश्रमण से मुक्त हो गये है जो हमें –'यह करो, यह न करो'– कहते हुए अपने अनुशासन में बाँधे रखता था। अब हम स्वतन्त्र हैं कि जो चाहें करेंगें और जिस तरह चाहें रहेंगें।'' महाकश्यप ने बहुत सोच विचार करने के बाद यह निर्णय लिया कि शीघ्र ही अधिक से अधिक विदान और अर्हत भिक्षुओं को एकत्र करके एक महासभा करनी चाहिए और उस सभा का आयोजन करके सभी भिक्खुओं की सहमति से बुद्ध के वचनों का संगायन किया जाना चाहिए और इस कार्य में तनिक भी विंलव नहीं होना चाहिए।

संगीति का उद्देश्य

इस संगीति का प्रमुख उद्देश्य भगवान गौतम बुद्ध की षिक्षाओं का संकलन था, क्योंकि उनके महापरिनिर्वाण के बाद कुछ भिक्षु ऐसे भी थे जो अपने स्वार्थनुसार भगवान बुद्ध की षिक्षाओं में परिवर्तन चाहते थे। यहीं कारण था कि यह संगीति रखी गयी और भगवान गौतम बुद्ध के उपदेषों को बिना किसी परिवर्तन के स्वीकार किया गया। बौद्ध संघ में एक सुभद्र भिक्षु थे जिनका मानना था कि अब जब बुद्ध हमारे वीच नहीं है तो हम चाहे जैसे और जिस तरह से उनकी शिक्षाओं को अपनाये या त्याग करे। यह बचन बौद्ध धर्म के स्थायित्व के लिए सन्देहास्पद था।यह सुनकर महास्थविर महाकाश्यप धर्म की रक्षा के विषय में चिन्तित हो जाना स्वाभिक ही था। वह यहीं सोच कर परेशान हो गये कि आज तो सुभद्र ने यह बात कही है, क्या पता कि सुभद्र जैसे अवीतराग अनेक भिक्षु भी उसके जैसा सोचते हो और वह एक न एक दिन यह बात कहे। बुद्ध ने भी अपने जीवन के अन्तिम दिनो में यही कहा था कि ''विनयो संघस्य आयु'' अर्थात विनय (शीलपालन) ही संघ की आयु है। यदि संघ पूर्णरूप से विनयों का पालन करेगा तो कायम बना रहेगा और यदि विनय का पालन नहीं करेगा तो संघ को टूटने बिखरने से कोई नहीं रोक सकता। इस सभा के बुलाये जाने का एक ओर कारण यह भी था कि भगवान् बुद्ध के सभी उपदेश मौखिक थे।उनके सभी शिष्य उन्हें स्मृति में ही रखने का प्रयत्न करते थे। परन्तु उससे उन भिक्षुओं और अर्हतों का ही गुजारा हो सकता था, जिनको स्वयं शास्ता से सुनने का अवसर मिला था, किन्तु बाद की जनताओं के लिये क्या होगा।जो भिक्षु भगवान् बुद्ध के जीवन काल में अपना अधिकतर समय और ध्यान बुद्ध–वचनों के स्मरण और संग्रह करने के बजाय उनके व्यावहारिक अभ्यास में ही लगाते थे, उन्हे भी यह चिन्ता होने लगी कि हमारे बाद उन पर भगवान् का सौंपा हुआ जो उत्तरदायित्व (संघ का धर्मपूर्वक सचांलन) है, उसे कौन सम्भालेगा। इस ज्ञान को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक कौन पहुचायेगा? और यही वह कारण थे जिनके उद्देश्यों की पूर्ति के लिए एक सभा की गयी। महाकाश्यप सुभद्र जैसे भिक्षुओं के असंयम को देखकर भिक्षुसंघ को सम्बोधित करते हुए कहते है कि, भिक्षुओं! आज हमारे सामने अधर्म बढ़ रहा है, धर्म का ह्रास हो रहा है। अविनय बढ़ रहा है,विनय का ह्रास हो रहा है इसलिए आओं हम सभी मिलकर धम्म और विनय का संगायन करे।[1] संगायन हेतु राजगृह में वैभार पर्वत के पार्श्व में स्थित सप्तपर्णी गुहा निश्चित की गयी।[2] उसी समय महास्थविर महाकाश्यप ने भिक्षु आनन्द के साथ अच्छे योग्य पाँच सौ भिक्षुओं का चयन किया व अन्य भिक्षुओं को कहा गया कि वे वर्षावास करे। राजगृह न जाय।[3] महाकश्यप ने मगधराज अजातषत्रु को अपने विचारों और निर्णयों से अवगत कराया। उनके विचारों से सहमत होकर अजातशत्रु ने राजगृह में संगीति की पूरी व्यवस्था करने के लिए आवश्यक आदेश जारी कर दिया। वैभार पर्वत पर सप्तपर्णी गुहा के सामने एक विशाल सभागार का निर्माण करवाया गया। भिक्खुओं के ठहरने और उनके भोजन की पूरी व्यवस्था करवाई गई। आज भी ऐसा कहा जाता है कि सप्तपर्णी गुहा के पीछे कुछ ऊपर की ओर जाने पर वह स्थल अब भी विद्यमान है जहां पहली बौद्ध संगीति के लिए अजातशत्रु द्वारा विशाल सभागार का निर्माण करवाया गया था।[4] निर्वाचित भिक्षु आषाढ़ पूर्णिमा तक राजगृह पहुंच गए। पहले मास उन्होने विहारों के प्रति संस्करण कराए। सप्तपर्णी गुहा में संगीति के लिए उन्होने मण्डप का निर्माण कराया। प्रथम मास इन्ही कार्यो में व्यतीत हो गया। श्रावण मास के कृष्णपक्ष की द्वितीया को स्थविर लोग संगीति के लिए मण्डप में एकत्र हुए।[5] तब तक आयुश्मान आनन्द ने अर्हत्व नहीं प्राप्त किया था, किन्तु उसी दिन उन्हे ज्ञान प्राप्त हो गया और वे भी मण्डप में अपने आसन पर आकर बैठ गये। सभापतित्व का कार्य महाकश्यप को सौपा गया। सभा की कार्यवाही में बुद्ध बचनों का संगायन और संग्रह ही मुख्य था। सभापति महाकाश्यप ने आनन्द से धर्म सम्बन्धी और उपालि से विनय सम्बन्धी प्रश्न पूछे और उनके उत्तरों का दूसरे भिक्षुओं ने संगायन किया।[6]

संगीति के परिणाम

1. इस प्रथम बौद्ध संगीति में चार परिणाम निकले।
2. स्थविर उपालि के नेतृत्व में विनय का संकलन।
3. स्थविर आनन्द के नेतृत्व में धम्म का संकलन।
4. आनन्द पर आक्षेप तथा उनका उत्तर।
5. छन्न भिक्षु को ब्रह्मदंण्ड एंव उसके द्वारा पश्चात्ताप।

आनन्द पर लगाये गये आरोप

महावंश के अनुसार प्रथम बौद्ध संगीति में आनन्द पर संघ की ओर से सात आरोप लगाये गये थे । परन्तु चुल्लवग में इन आरोपों की सख्या पाँच बतायी गयी है। परिषद में सम्मिलित होने से पूर्व स्थविर आनन्द को संघ के उन आरोपों का उत्तर देना पड़ा था, जो उन पर लगाये गये थे। स्थविर आनन्द पर ये पाँच आरोप थे।

1– आनन्द पर पहला आरोप यह था कि उन्होने बुद्ध के महापरिनिर्वाण से पहले उनसे यह क्यों नहीं पूछा कि वह क्षुद्र– अनुक्षुद्र शिक्षाऐं कौन–कौन सी है। 2– आनन्द पर दूसरा आरोप यह था कि उन्होनें भगवान बुद्ध की वर्षासाटी (वर्षा ऋतु में पहनकर नहाने वाले कपड़े) को पैर के अगूंठे से दबाकर क्यों सिया था। 3– आनन्द पर तीसरा आरोप यह था कि उन्होने भगवान के शरीर की वन्दना करने का अवसर पहले स्त्रियों को क्यों दिया, क्योंकि उन रोती हुई उन स्त्रियों के आंसुओं से भगवान का शरीर लिप्त हो गया। 4– आनन्द पर चौथा आरोप यह था कि उन्होनें भगवान् से अपने शरीर को कल्पपर्यन्त स्थिर रखने की प्रार्थना क्यों नहीं की। 5– आनन्द पर अन्तिम आरोप यह था कि उन्होनें बुद्ध

के द्वारा बताए गए धर्म विनय में स्त्रियों की प्रवज्या के लिए उत्सुकता क्यों पैदा की।[7]

आनन्द ने पहले प्रश्न का उत्तर दिया, कि याद न होने के कारण वह बुद्ध से नहीं पूछ पाये कि क्षुद्र–अनुक्षुद्र कर्म कौन–कौन से है, उन्होनें कहा कि मेरी इस भूल को दुष्कृत नहीं समझना चाहिए, फिर भी मैं अपनी इस भूल के लिए आप सभी भिक्खुओं से क्षमा प्रार्थना करता हूं। आनन्द ने दूसरे प्रश्न का उत्तर दिया, कि मैने भगवान का अपमान करने के लिए वर्षासाटी को पैर से दबाकर नहीं सिया था। मैनें तो तथागत के चीवर को शीघ्र और अच्छा सिलने के उददेश्य से ही पैरो से दबा कर सिया था। तथागत का अपमान करना मेरा उददेश्य कतई नहीं था। फिर भी आप ऐसा करने को गलत मानते है तो मै अपनी इस भूल को स्वीकार करते हुए आप सभी से क्षमा प्रार्थना करता हूँ। संघ मुझे क्षमा करे। आनन्द ने तीसरे प्रश्न का उत्तर दिया, कि लाखों श्रद्धालुओं को एक एक करके दर्शन में बहुत समय लग रहा था। अति विकल होने की संभावना को जानकर समय बचाने के ख्याल से मैंने ऐसा किया था।किन्तु तथागत के बिछोह के दुख से व्याकुल स्त्रियां अपने पर नियनत्रण नहीं कर पा रही थी।जिससे कि उनके आंसुओं से तथागत का शरीर भीग गया। यदि मेरे द्वारा किए गए इस कार्य को संघ दुष्कृत मानता है, तो मैं अपने इस कृत्य के लिए भी क्षमा मांगता हूं। आनन्द ने चौथे प्रश्न का उत्तर दिया, उस समय मार ने मेरे मन को भ्रमित कर दिया था। मुझे तथागत की आज्ञा पालन के अतिरिक्त और कुछ भी करने की समझ नहीं हो सकी। यह तो भगवान के द्वारा ही पूर्व निश्चित था। इसलिए मैं दोषी कैसे हो सकता हूं फिर भी यदि संघ इसे अपराध मानता है तो मैं संघ से क्षमा मांगता हू। महाथेर आनन्द ने अन्तिम उत्तर इस प्रकार दिया, भंतें, महाप्रजापति गोतमी, जो कि भगवान की मौसी हैं, आपादिका हैं, पोषिका हैं, क्षीरदायिका हैं। माता महामाया के दिवंगत होने पर प्रजापति गोतमी ने ही उन्हे दूध पिलाया–मां की ममता दी। ऐसी महान नारी का ध्यान करकें मैंने तथागत के धम्म–विनय में स्त्रियों को भी स्थान दिलाने का प्रयास किया था। यधपि मेरी दृष्टि में यह दुष्कृत नहीं है, फिर भी मैं पूरे संघ से क्षमा प्रार्थना करता हूं।[8]

उपस्थित भिक्खुसंघ ने आनन्द की बातों को जानकर संतुष्ट हो आनन्द को क्षमा किया और इसके बाद ही तब प्रथम संगीति की कार्यवाही आगे बढ़ी। संगीति के अध्यक्ष महाकस्यप ने महाथेर आनन्द से सुत्तों (बुद्ध कथनों) से संबंधित प्रश्न किये, जिनका सन्तोषजनक उत्तर आनन्द ने दिया। आनन्द ने एक एक बुद्ध उपदेश अर्थात सुत्त की जानकारी संघ को दी, संघ के द्वारा उन सभी सुत्तों की शुद्धता और प्रमाणिकता की जांच करने के बाद ही उन्हे स्वीकार किया गया। और तब उस संगीति में उपस्थित सभी भिक्खुजनों ने मिलकर उन सुत्तों का संगायन किया। उसके बाद ही वे सभी सुत्त 'सुत्तपिटक' के रूप में त्रिपिटक का एक भाग बन सके। प्रत्येक उपदेश का पाठ करने से पूर्व ही आनन्द ने कहा –'एंव मे सुत्तं' अर्थात 'ऐसा मैनें सुना'। आनन्द ने इस बात पर भी बल नहीं दिया कि बुद्ध के द्वारा ही ऐसा कहा गया, बल्कि उन्होनें यह स्पष्ट करने का प्रयास किया कि मेरे द्वारा ही ऐसा सुना गया इसमें कही कोई गलत, अनुचित या दोष हो सकता है, तो वह मेरे सुनने में ही हो सकता है, बुद्ध के कहने में नहीं। इस प्रकार यदि कोई गलती रह जाती है तो उसका उत्तरदायित्व संगीति पर ही रहा, सम्यक् सम्बुद्ध पर नहीं। इस प्रकार इस बौद्ध संगीति में महाथेर आनन्द ने सम्पूर्ण सुत्तों के संकलन की प्रक्रिया में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया। उनके यह महान कार्य बौद्ध इतिहास में सदैव अविस्मरणीय रहेगा।[9]

धर्म का संगायन

इसी प्रकार महाकाश्यप ने आयुमान आनन्द से सम्पूर्ण धर्म सम्बन्धी प्रश्न पूछे। आनन्द ने उन सभी प्रश्नों का उत्तर दिया। महाकाश्यप ने आनन्द से प्रश्न किया, "आनन्द! भगवान् ने ब्रह्मजालसूत्र का उपदेश कहाँ किया था व किस को उद्देश्य कर उपदेश किया था? आनन्द ने उत्तर दिया, "भन्ते! नालन्दा एंव राजगृह के मध्य, राजा की छावनी के रूप में बसे हुए अम्बलट्ठिका (ग्राम) में सुप्रिय परिव्राजक एंव ब्रह्मदत्त माणवक को।

पुनः महाकाश्यप ने पूछा," आनन्द! भगवान् ने श्रामण्यफल सूत्र का उपदेश कहाँ किया था?" "भन्ते! राजगृह के जीवक द्वारा निर्मापित आम्रवन में।"इस सूत्र से संबद्ध संवाद किस के साथ हुआ था?""वैदेहिपुत्र अजातषत्रु के साथ।" इस प्रकार निश्चित धम्म और विनय का सारी सभा ने संगायन किया सुत्तपिटक की रूपरेखा तैयार हो जाने के पश्चात् विनय के महान ज्ञाता महाथेर उपालि को विनय की सम्पूर्ण जानकारी प्रस्तुत करने के लिए पूरे भिक्खुसंघ की सहमति से संगीति द्वारा चयनित किया गया। तब इस संगीति के अध्यक्ष महाकस्यप ने उपालि से विनय से संबंधित प्रष्नों को पूछा जिसका उत्तर उपालि ने इस प्रकार दिया।

विनय का संगायन

आयुश्मान महाकाश्यप ने आयुश्मान उपालि से यह पूछा–उपालि!"भगवान् ने प्रथम पाराजिक शिक्षा कहाँ प्रज्ञप्त की, किसको लेकर व किस घटना पर? उपालि ने उत्तर दिया, भन्ते, वैशाली में, "सुदिन्न कलन्दपुत्र को लेकर व "मैथुन धर्म की घटना पर।" पुनः उन्होनें प्रश्न किया, उपालि यह बताओं कि यह "द्वितीय पाराजिक शिक्षा भगवान् ने कहा से प्रज्ञप्त की थी?"उत्तर मिला, "राजगृह में, भन्ते!" "किस को उद्देश्य कर?" "धनिय कुम्भकारपुत्र को।" "किस घटना पर?" "अदत्तादान (चौरी, डकेती) पर। "और आयुश्मान उपालि! यह तीसरी पाराजिक शिक्षा कहाँ प्रज्ञप्त की गयी थी?" "वैशाली में," "किस को उद्देश्य कर उदकर?" बहुत से भिक्षुओं को।" किस घटना पर?" "मनुष्य विग्रह (प्राणिहत्या) पर। "अन्त में महाकाश्यप ने उपालि से पूछा, उपालि! "यह चतुर्थ पाराजिक शिक्षा कहाँ प्रज्ञप्त हुई थी?" "वैशाली में, भन्ते!" "किस को उद्देश्य कर?""वल्गुमुदानदीतीरनिवासी भिक्षुओं को।" "किस घटना पर?" "लोकोत्तर चमत्कार (दिव्य शक्ति) पर।"

तब आयुश्मान् महाकाश्यप ने उपालि से प्रथम, द्वितीय, तृतीय व चतुर्थ पाराजिक की वस्तु (कथा) भी पूछी, निदान (कारण) भी पूछा, व्यक्ति भी पूछा, प्राज्ञाप्ति (विधान) भी पूछा, अनु–प्रज्ञप्ति भी पूछी, आपत्ति भी पूछी, अनापत्ति भी पूछी। इसी पद्धति से उन ने भिक्षु एंव भिक्षुणी– दोनों ही विभंगों पर प्रश्न किये तथा पूछे और सभी प्रश्नों का उत्तर

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-III, ISSUE-II, November-2014
E: ISSN No. 2349-9443
Periodic Research

आयुश्मान् उपालि ने क्रमशः विस्तारपूर्वक दिया। इस प्रकार निश्चित धम्म और विनय का सारी सभा ने संगायन किया।[10]

प्रथम बौद्ध संगीति में आयुश्मान पुराण एक ऐसे भिक्खु थे जो इस संगीति की समाप्ति पर राजगृह पहुचें पर इस संगीति की कार्यवाही से सन्तुष्ट नहीं हुऐ, क्योंकि जब संगीति के सभी भिक्खुओं ने उनसे धर्म और विनय का अनुसरण करने के लिए कहा तो यह सुनकर पुराण ने कहा कि आप लोगों ने बहुत ही अच्छे ढंग से संगायन किया है फिर भी मैनें जैसा भगवान बुद्ध से इस धम्म को सुना है मैं वैसा ही धारण करूंगा। पुराण के इस कथन से यह तो स्पष्ट था कि वह इस संगीति की कार्यवाही से सन्तुष्ट नहीं थें। उनको सन्द्रेह था कि भिक्खुओं ने बुद्ध के बचनों को तोड़ मरोड़कर अपने अनुकूल कर लिया होगा। परन्तु भंतें पुराण की यह सोच अपनी व्यक्तिगत थी और कुछ भी नहीं।[11]

प्रथम बौद्ध संगीति की समाप्ति पर एक ऐसे भिक्खु भी थे जिनको ब्रह्मदंड देने का निश्चय किया गया था। यह छन्न वही थे जो कभी सिद्धार्थ गौतम के रथ के सारथी थे। इसी छन्न ने सिदार्थ गौतम को महाभिनिष्क्रमण के समय अष्व कंथक पर विठाकर अनोमा नदी तक पहुंचाया था। छन्न अपने स्वामी गौतम के प्रति बहुत वफादार और विन्रम थे वह भगवान बुद्ध के प्रति बहुत कृतज्ञ भी थे क्योंकि उन्ही की कृपा से वह भिक्खु बने थे। परन्तु समय के साथ साथ उनमें अजीव से परिवर्तन होने लगें थे। अब वह ऐसी बाते करने लगे थे जो अन्य भिक्खुओं के साथ ही बुद्ध को भी खराब लगने लगी। वह अपनी मनमानी करने लगे थे तथा जो भी मन आता था वह भिक्खुओं को बोलने लगे थे अर्थात वह मुहंफट हो गये थे।

यहीं कारण था कि भगवान बुद्ध ने अपने महापरिनिर्वाण से पूर्व आनन्द से कहा था कि आनन्द मेरे न रहने के बाद संघ भिक्खु छन्न को ब्रह्मदंड की आज्ञा सुनाये। आनन्द के द्वारा ब्रह्मदंड के विषय में विस्तार से पूछने पर भगवान बुद्ध ने कहा था कि '' छन्न भिक्खु जैसा चाहें वैसा बोलें, पर छन्न को कोई उपदेष न दिया जाय, न ही कोई अनुषासन के विषय में उनसे बोले और न ही कोई उनसे बात करे। छन्न से संबंध विच्छेद ही छन्न के लिए ब्रह्मदंड है। आनन्द के द्वारा जव सभी भिक्खुयों को भगवान की इस आज्ञा से अवगत कराया तो सभी ने आनन्द से कहा कि वह उन पांच सौ भिक्खुओं के साथ कोसाम्वी जायें और भिक्खु छन्न को भगवान के इस ब्रह्मदंड से अवगत करायें। उस समय छन्न भिक्खु कोषाम्वी महाजनपद में ठहरे हुए थे। आनन्द सभी पांच सौ भिक्खुओं के साथ नाव की सवारी कर कौषाम्वी में पहुचें और कौशाम्वी के राजा उदयन के उधान के समीप के एक वृक्ष के नीचें बैठे।[12]

आनन्द का राजा उदयन और उनकी रानीयों को उपदेश

जव आनन्द उधान मै बैठे हुए थे तभी राजा उदयन अपनी रानियों के साथ उधान की सैर कर रहे थे। रानीयों को जैसे ही मालूम हुआ कि आचार्य आनन्द उनके उधान में विराजमान है, वह अपने आप को उनसे मिलने के लिए रोक न पायीं और राजा उदयन की आज्ञा लेकर वह आनन्द के दर्शन हेतु पहुंच गयीं और उनका अभिवादन कर एक ओर बैठ गयी। एक ओर बैठी हुई रानियों को भंतें आनन्द ने धार्मिक कथा के माध्यम से उपदेश देकर प्रसन्न कर दिया। प्रसन्न होकर रानीयों ने भदंत आनन्द को पांच सौ चीवर दान स्वरूप भेंट किये। रानियों द्वारा आनन्द के उपदेशों की प्रषंसा कर उनको अभिवादन कर सभी रानियां राजा उदयन के पास आकर सारा वृतान्त सुनाने लगीं।[13] राजा उदयन को जव मालूम हुआ कि उन्होनें स्थविर आनन्द को पांच सौ चीवर दान में दिये है तो वह बहुत हैरान हो गये और सोचने लगे कि आखिरकार आनन्द इन पांच सौ वस्त्रों का क्या करेंगें।इतने अधिक चीवरों को श्रमण आनन्द ने कैसे स्वीकार कर लिया। इतने अधिक चीवरों से क्या आनन्द कपड़ों का व्यापार करेंगें या फिर वस्त्रों की दुकान खोलेंगें। तव राजा उदयन इन प्रश्नों का जबाव लेने स्वयः स्थविर आनन्द के पास पहुचें जहा वे ठहरे हुए थे, वहा गये और उनका अभिवादन कर एक ओर बैठ गये और उदयन ने तभी आनन्द से यह प्रश्न किये जो इस प्रकार है।

राज उदयन व महाथेर आनन्द की वार्ता

राजा उदयन ने श्रमण आननद से पूछा कि भंतें क्या हमारी रानियां आपके दर्शन करने यहां आयी थी। भिक्खु आनन्द ने उत्तर दिया, हां महाराज, आपकी रानियां यंहा आयीं थी। उदयन– क्या हमारी रानियों ने आप को कुछ दिया। आनन्द– हॉ महाराज, पांच सौ चीवर दिये। उदयन– आप इतनें अधिक चीवरों का क्या करेंगे। आनन्द– महाराज, जो भी फटे चीवर वाले भिक्खु है, उन्हे देंगें। उदयन– भंतें, और जो पुराने चीवर है, उनका आप क्या करेंगें। आनन्द– महाराज, उन पुराने चीवरों से बिछौनें की चादरें बनायेगें। उदयन– भंतें, वह जो पुराने बिछौनों की चादरें है, उनका क्या करेंगें। आनन्द– महाराज, उनसे गददे् के गिलाफ बनाऐंगे। उदयन– वह जो पुराने गददे् के गिलाफ है, उनका क्या करेंगे। आनन्द– महाराज, हम उनका फर्श बनाऐंगे। उदयन– वह जो पुराने फर्श है, उनका क्या करेंगे। आनन्द– महाराज, उनका पायदान बनायेंगे। उदयन– और उन पुराने पायदानों का क्या करेंगे। आनन्द– उनका महाराज हम झाड़न बनायेंगे। उदयन– भंतें पुराने झाड़न भी तो हैं, उनका आप क्या करोगे। आनन्द– महाराज, हम उन पुराने झाड़नों को कूटकर, गीली मिटटी के साथ मिलाकर पुराने पात्रों पर लेप कर देंगे। तब राजा उदयन ने आनन्द से कहा कि आप सभी बौद्ध भिक्षु लोग बहुत ही सोच समझकर कार्य करते हो कुछ भी व्यर्थ नहीं जाने देते। राजा उदयन ऐसा कहते हुऐ बहुत ही प्रसन्न हुए और उन्होने पांच सौ चीवर अपनी ओर से मंगवाकर पुनः आयुश्मान आनन्द को दान में दिये। यह बौद्धों के इतिहास में वह पहला क्षण था जब महाथेर आनन्द को पहली बार एक हजार चीवरों की भिक्षा दान में प्राप्त हुई थी।[14]

छन्न को ब्रह्मदंड

तब आयुश्मान आनन्द छन्न भिक्षु को ब्रह्मदंड देने के लिए घोषिताराम बिहार गए, जहा छन्न ठहरे हुए थे। आनन्द ने छन्न को भगवान बुद्ध के द्वारा दिये गये ब्रह्मदंड से अवगत कराया। आनन्द के यह वचन सुनकर छन्न के होश उड़ गये और वह आनन्द से कहने लगे कि यदि संघ मुझसे बोलेगा नही तो मैं असमस ही मर जाऊंगा। इतना कहते ही छन्न की आवाज रूक गयी, शरीर शिथिल पड़ गया और वह मूर्छित होकर गिर पड़े। कुछ समय बाद जब

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-III, ISSUE-II, November-2014
E: ISSN No. 2349-9443
Periodic Research

उनको होश आया तों वे ब्रह्मदंड को जानकर बहुत दुखी हुए। जव तक सभी भिक्षु वहा से जा चुके थे। छन्न के मन में इस ब्रह्मदंड से मुक्त होने के लिए जुगुप्सा होने लगी। उन्होनें एकांकी रहकर अपने व्यवहार में अपने आचरण में परिवर्तन कर लिया। उनको अपनी गलती की समझ हो गयी और उन्होनें अपनी वाणी पर पूर्ण नियन्त्रण कर उसे मधुर बना लिया। अब उनका हदय पवित्र हो चुका था। शीघ्र ही उन्होनें उत्तम ज्ञान का साक्षात्कार किया और वे शीघ्र ही अर्हत हो गये। जब भंतें छन्न को अर्हत पद प्राप्त हो गया, तो वे महाथेर आनन्द से बोले, आनन्द अब मुझसे ब्रह्मदंड हटा लो। आनन्द ने उनसे प्रसन्न होकर कहा कि भन्ते जब तुमने अर्हत पद प्राप्त किया था, तभी आप इस ब्रह्मदंड के पाप से मुक्त हो गये थे। औार इस प्रकार छन्न को भी अपने अपराध से मुक्ति मिली ओर उनको भी अर्हत पद की प्राप्ति हुई।[15]

निष्कर्षतः एंव सुझाव

कहा जा सकता है कि यह संगीति 'पच्चशतिका' संगीति भी कहलायी, क्योंकि इसमें पॉच सौ भिक्षु सम्मिलित हुए थे। इसके साथ ही यह संगीति 'स्थविरीय संगीति भी कहलायी क्योंकि इस में शामिल होने बाले सभी भिक्षु स्थविर थे। हर दिन आनन्द से धर्म और उपालि से विनय संबंधि प्रष्न पूछे गये। इस तरह संगीति की कार्यवाही बर्षावास के तीन माह तक चली।मगधराज अजातषत्रु इसके संरक्षक बने।[16] जिस उद्देश्य को लेकर यह संगीति रखी गयी थी, वह उद्देश्य पूरा हुआ और धर्म तथा विनय में जिन शिक्षाओं का संकलन हुआ उसको सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया। यदि हम दूसरे शव्दों में कहें तो भगवान बुद्ध के द्वारा उपदेशित धम्म को सुरक्षा, स्थायित्व और दीर्घ आयु देने तथा उसका विस्तार करने की यही पहली योजना थी। साथ ही पालि साहित्य और बुद्ध वचनों का संकलन प्रथम बौद्ध संगीति का ही परिणाम था।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. उपाध्याय, डा॰ भरत सिंह, ''पालि साहित्य का इतिहास'', (1972)हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग पृ स. 84–85
2. महावंश,3 / 19 मूल एंव हिन्दी रूपान्तर, अनुवादक,स्वामी द्वारिकादासशास्त्री, (1996),बौद्ध आकर ग्रन्थमाला,महात्मा गॉधी काशी विद्यापीठ वाराणसी पृ स.33
3. वही,3 / 15 मूल एंव हिन्दी रूपान्तर, अनुवादक,स्वामी द्वारिकादासशास्त्री, (1996),बौद्ध आकर ग्रन्थमाला,महात्मा गॉधी काशी विद्यापीठ वाराणसी पृ स.31
4. बौद्ध रोषन, ''महान बौद्ध संगीतियां'',(2014), सम्यक प्रकाषन, पष्चिमपुरी नई दिल्ली, पृ स.19
5. दीपवंश,4 / 5 मूल एंव हिन्दी रूपान्तर, अनुवादक,स्वामी द्वारिकादासशास्त्री, (1996), बौद्ध आकर ग्रन्थमाला,महात्मा गॉधी काशी विद्यापीठ वाराणसी पृ स. 55
6. वही,4 / 7, मूल एंव हिन्दी रूपान्तर, अनुवादक,स्वामी द्वारिकादासशास्त्री, (1996),बौद्ध आकर ग्रन्थमाला,महात्मा गॉधी काशी विद्यापीठ वाराणसी पृ स. 55
7. महावंश, भूमिका,मूल एंव हिन्दी रूपान्तर,अनुवादक,स्वामी द्वारिकादासशास्त्री, (1996), बौद्ध आकर ग्रन्थमाला,महात्मा गॉधी काशी विद्यापीठ पृ स.31
8. विनयपिटके चुल्लवग्गपालि,11,पच्चशतिकस्कन्धक,6 आनन्दस्स दुक्कटानि,1–5,बौद्ध भारती प्रकाशन, मकबूल आलम रोड, वाराणसी पृ स. 636 / 37
9. बौद्ध रोशन, ''महान बौद्ध संगीतियां'',(2014), सम्यक प्रकाशन, पश्चिमपुरी नई दिल्ली, पृ स.30
10. चंचरीक, कन्हैया लाल,'' भगवान गौतम बुद्ध, जीवन और दर्शन,'',(2006),यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृ स. 75
11. पाण्डेय,गोविन्द्र चन्द्र, ''बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास'',(1963), हिन्दी समिति सूचना विभाग उत्तर प्रदेश लखनऊ, पृ स.158
12. बौद्ध रोशन, ''महान बौद्ध संगीतियां'',(2014), सम्यक प्रकाशन, पश्चिमपुरी नई दिल्ली, पृ स.35–36
13. विनयपिटके चुल्लवग्गपालि,11,पच्चशतिकस्कन्धक,8 उदेयनराजवत्थु,11वा संवाद, मूल एंव हिन्दी रूपान्तर, अनुवादक,स्वामी द्वारिकादासशास्त्री, बौद्ध भारती प्रकाशन, मकबूल आलम रोड, वाराणसी पृ स. 639 / 40
14. विनयपिटके चुल्लवग्गपालि,11,पच्चशतिकस्कन्धक,8 उदेयनराजवत्थु,12वा संवाद, बौद्ध भारती प्रकाशन, मकबूल आलम रोड, वाराणसी पृ स. 634
15. विनयपिटके महावग्गपालि,(2013), प्रथम बौद्धसंगीति, मूल एवं हिन्दी रूपान्तर, अनुवादक, स्वामीद्वारिकादासशास्त्री, बौद्ध भारती प्रकाशन, मकबूल आलम रोड, वाराणसी पृ स. 18
16. लघुशोध प्रबन्ध, सहाय, श्रीमति सुनीता, ''बौद्ध धर्म का उद्भव एंव विकास एक अध्ययन'',(2007–8), रानी दुर्गावती विश्वविधालय जबलपुर, पृ स. 27–28